राष्ट्रीय संगोष्ठी रिपोर्ट

भारतीय लोकतंत्र और मीडिया

(Indian Democracy and Media)

28-29 मार्च, 2017

आयोजक- संचार एवं पत्रकारिता विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित आयोजन

संगोष्ठी प्रस्तावना

दुनिया के लोकतांत्रिक देशों में भारत एक अहम् स्थान रखता है. भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त लोकतांत्रिक अधिकार ही भारतीय नागरिकों को दुनिया के अन्य ऐसे कई देशों से अलग करता है जहां लोकतांत्रिक शासन प्रणाली नहीं है. लोकतंत्र की अवधारणा है- जनता द्वारा, जनता के लिए जनता का शासन. भारतीय संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के उल्लेख के आधार पर ही हम मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ, सजग प्रहरी और न जाने कितने उपमाओं से अलंकृत करते रहे हैं. अभिव्यक्ति का आधिकार और प्रेस की स्वतन्त्रता दो अलग-अलग चीजें हैं लेकिन समय और जरूरत के अनुसार इसको घालमेल किया जाता रहा है और आवश्यकतानुसार व्याख्या करते हुए मीडिया का एक बहुत बड़ा परिदृश्य हमारे सामने है और यह एक उद्योग की शक्ल ले चुका है.

जब हम भारतीय लोकतंत्र की बात करते हैं तो इसका आशय यह है कि भारत के सभी नागरिकों को वे सभी अधिकार प्राप्त हैं जिनका वर्णन भारतीय संविधान में किया गया है. स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्त्व जैसी अवधारणाएं भी संविधान का हिस्सा हैं. भारतीय लोकतंत्र की गरिमा को बनाए और बचाए रखने का जिम्मा मीडिया ने यह कहकर उठाया कि वह लोकतंत्र का सजग प्रहरी है और इसकी रक्षा के लिए इस चौथे स्तम्भ का होना अति आवश्यक है. भारतीय मीडिया का विकास भी इसी परिप्रेक्ष्य में हुआ. इन तमाम बातों के अलावा समय-समय इसकी पड़ताल होती रही है कि क्या वास्तव में मीडिया लोकतंत्र को बचाए और बनाए रखने में अपनी भूमिका अदा करने में कितना सफल और असफल रहा है.

भूमंडलीकरण के दौर के बाद मीडिया के स्वरुप में तेजी से परिवर्तन आया जिसके बहुत से कारण रहे. नई तकनीक का आगमन, सूचनाओं की अधिकता, जनसंख्या वृद्धि, पूंजी की अधिकता, उपभोक्ताओं का बढ़ना आदि ऐसे बहुत से अन्योनाश्र्यी संबंध और कारण मीडिया को एक नया स्वरुप देने में कामयाब रहे जो पहले कभी नहीं रहा. तेजी से बदलती इस दुनिया में और सूचनाओं के अथाह संजाल की दुनिया में भारतीय लोकतंत्र आज कहाँ खड़ा है, यह जानने के लिए मीडिया के हस्तक्षेप और भूमिका की तलाश आवश्यक है. मीडिया में बढ़ते पूंजी के दखल ने भी मीडिया की अवधारणा को नए सिरे से परिभाषित किया है. इसलिए इसके राजनीतिक अर्थशास्त्र को भी समझना आवश्यक है. मीडिया की भूमिका, उत्तरदायित्व, सीमाओं को नए सिरे से देखना इसलिए भी आवश्यक है ताकि हम अपनी गलतियों और अच्छाइयों से सबक ले सकें और भविष्य की मीडिया को एक सार्थक दिशा दे सकें जिससे भारतीय लोकतंत्र को अधिक मजबूत किया जा सके.

बदलते समय के साथ समकालीन विमर्श भी मीडिया की केंद्र बिंदु रहे हैं. स्त्री, दलित, आदिवासी एवं समाज के अन्य वंचित तबके से जुड़े प्रश्न, मानवाधिकार, संस्थानों की स्वायत्तता, शिक्षा व्यवस्था, राजनीति इत्यादि से जुड़े अनेक मुद्दे आए दिन मीडिया में प्रमुखता से स्थान पाते हैं. ये प्रश्न नागरिकों को प्रदत्त लोकतांत्रिक आधिकारों से भी जुड़े हैं और समग्रता में इन्हीं से भारतीय लोकतंत्र को परिभाषित करने में मदद मिलती है. इसलिए भारतीय लोकतंत्र और मीडिया को एक साथ रखकर बहुआयामी विमर्शों पर चर्चा करना समकालीन और प्रासंगिक बन जाता है. इन्हीं बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए उक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया.

संगोष्ठी का उद्देश्य-

मीडिया को लोकतंत्र का रक्षक माना जाता है. आयोजित संगोष्ठी का उद्देश्य था अकादमिक विमर्श के माध्यम से भारतीय लोकतंत्र और मीडिया के बहुआयामी पक्षों की समझ विद्यार्थियों, शोधार्थियों में विकसित की जा सके ताकि वे अपने अध्ययन को एक नई दिशा दे सकें. यह समझ मीडिया प्रोफेशनल्स के साथ-साथ सामान्य जन में भी विकसित होनी चाहिए ताकि लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करने में वे सहयोग कर सकें. मीडिया और इसके अन्तरानुशासनिक पहलुओं को रेखांकित कर शोध के नए क्षेत्र की संभावनाओं को रेखांकित करना, वंचित और पिछड़े वर्गों के विमर्श को केंद्र में लाना ताकि विकास की दिशा और गति को तेज किया जा सके. संगोष्ठी का उद्देश्य

और महत्त्व इस रूप में भी है कि इस अकादमिक विमर्श के माध्यम से यह भी जानेंगे कि हम अपने दैनिक व्यवहार और आचरण में किस तरीके का परिवर्तन लाकर लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं. हम अपने दिनचर्या में ऐसे कई कार्य कर सकते हैं जो बहुत ही छोटे होंगे लेकिन समग्रता में यदि देखा जाए तो वे नागरिकों के लोकतंत्र में आस्था को न केवल बढ़ाएंगे बल्कि एक मजबूत स्तम्भ बनाने में सहायक सिद्ध होंगे.

आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतर्गत निम्नलिखित उपविषयों को रखा गया था जिनके विभिन्न श्रीर्षकों के अंतर्गत प्रतिभागियों ने अपने शोध-पत्र भेजे.

1. लोकतंत्र के विविध आयाम और मीडिया
2. सूचना क्रान्ति और लोकतंत्र का बदलता स्वरुप
3. भूमंडलीकरण : ब्रांड संस्कृति, मीडिया दृष्टि और 'लोग'
4. मीडिया का यथार्थ : क्षेत्रीय बनाम राष्ट्रीय मीडिया
5. मीडिया और वंचित समाज
6. मीडिया और जन आंदोलन
7. मीडिया, स्त्री और मानवाधिकार
8. समय, समाज और सिनेमा
9. मीडिया शिक्षा: बदलते प्रतिमान
10. मीडिया का राजनीतिक अर्थशास्त्र

आयोजन में संगोष्ठी के अन्य आयामों के अंतर्गत मीडिया विशेषज्ञों के साथ विशेष परिचर्चा 'चाय पर चर्चा' का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय और वाह्य मीडिया विशेषज्ञों और उनके साथ विद्यार्थियों की विशेष रूप से सहभागिता हुई.

आमंत्रित वाह्य विषय-विशेषज्ञ

1. प्रो. आर.एम. पाठक (काशी विद्यापीठ, वाराणसी)
2. प्रो. हेमंत जोशी, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली
3. प्रो. वीरेंद्र व्यास, महात्मा गांधी चित्रकूट विश्वविद्यालय
4. डॉ. आनंद प्रधान, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली

आंतरिक/स्थानीय विषय विशेषज्ञ-

1. प्रो. सुरेश आचार्य,
2. डॉ. अनुपमा कौशिक, राजनीति शास्त्र विभाग
3. डॉ. गिरीश मोहन दुबे, अर्थशास्त्र विभाग
4. प्रो. पी.पी. सिंह, विधि विभाग
5. डॉ. ललित मोहन, विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग
6. प्रो. जे. के. मिश्रा, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

छात्र/ शिक्षक/वाह्य प्रतिभागी

आयोजन में विश्वविद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ-साथ अन्य विश्वविद्यालयों के शिक्षक एवं शोधार्थी/विद्यार्थियों ने सहभागिता की. आयोजन में लगभग 120 पंजीकृत प्रतिभागियों ने भाग लिया.

28 मार्च, 2017

सत्र	समय	विषय
प्रथम सत्र	**10:00–11:30**	**उद्घाटन सत्र**
	11:30–11: 45	चाय अंतराल
द्वितीय सत्र	**11: 45–01:30**	**भारतीय लोकतंत्र : विविध आयाम**
	01:30–03:00	दोपहर का भोजन
तृतीय सत्र	**03:00–04:30**	**हाशिए के लोग, मीडिया और लोकतंत्र**
	04:30–04:45	चाय अंतराल
चतुर्थ सत्र	**04:45–06:00**	**मीडिया विशेषज्ञों के साथ परिचर्चा**

29 मार्च, 2017

सत्र	समय	विषय
पंचम सत्र	**10:00 – 11:30**	**समय, समाज और सिनेमा**
	11:30– 11: 45	चाय अंतराल
षष्ठम सत्र	**11: 45 – 01:30**	**मीडिया शिक्षा: बदलते प्रतिमान**
	01: 30 –03:00	दोपहर का भोजन
सप्तम सत्र	**03:00–04:30**	**मीडिया की आँखों से : भविष्य का लोकतंत्र और लोकतंत्र का भविष्य (समाहार सत्र)**
	04:30 –04:45	चाय अंतराल
अष्टम सत्र	**04:45-05:30**	**समापन समारोह व प्रमाण-पत्र वितरण**

भारतीय लोकतंत्र और मीडिया
Indian Democracy and Media
28-29 मार्च 2017
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
द्वारा प्रायोजित
आयोजक

राष्ट्रीय संगोष्ठी
National Seminar
भारतीय लोकतंत्र और मीडिया
Indian Democracy and Media

आयोजन समिति

संरक्षक

प्रो. राघवेंद्र पी. तिवारी

कुलपति

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

अधिष्ठाता

प्रो. जे. के. मिश्रा

कला एवं सूचना विज्ञान संकाय

विभागाध्यक्ष

डॉ. ललित मोहन

संयोजक

डॉ. विवेक जायसवाल

सह- संयोजक

डॉ. अलीम अहमद खान

डॉ. राकेश शर्मा

संगोष्ठी आयोजक
संचार एवं पत्रकारिता विभाग
डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय)
सागर (म.प्र.) 470003

संयोजक
डॉ. विवेक कुमार जायसवाल
सहायक प्राध्यापक